शिक्षक दिवस के अवसर पर माननीय राज्यपाल महोदय का उद्‌बोधन

(दिनांक 05 सितम्बर, 2024)

जय हिन्द!

शिक्षक दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी प्रबुद्ध शिक्षक जनों के बीच आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस पावन दिन, शिक्षक दिवस की आप सभी को बहुत–बहुत शुभकामनाएं!

आज के इस दिवस पर पुरस्कार प्राप्त करने वाले सभी शिक्षकों को हृदय तल से बधाई। प्रदेशभर के ऐसे शिक्षकों को सम्मानित करना जिन्होंने अपनी समर्पित सेवा से शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है, वास्तव में गौरव का विषय है।

शैलेश मटियानी राज्य शैक्षिक पुरस्कार का उद्देश्य प्रदेश के बेहतरीन शिक्षकों के अद्वितीय योगदान को स्वीकार करना और उन शिक्षकों को सम्मानित करना है, जिन्होंने अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया है, बल्कि अपने छात्रों के जीवन को भी समृद्ध किया है।

विषम परिस्थितियों एवं दुर्गम क्षेत्रों में विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण योगदान देने वाले शिक्षक वास्तव सम्मान के अधिकारी हैं। मैं शिक्षा के क्षेत्र

में आपकी सेवाओं और प्रतिबद्धता के लिए प्रदेशवासियों की ओर से आपका आभार व्यक्त करता हूँ।

एक शिक्षक की भूमिका व्यक्ति और समाज को रोशनी दिखाने की होती है। युवाओं को गढ़ने और राष्ट्र निर्माण में आपके द्वारा दिए जा रहे अमूल्य योगदान की मैं भूरि–भूरि प्रशंसा करता हूँ। ये हमारा सौभाग्य है कि हमारी वर्तमान राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मु जी का जीवन भी शिक्षक के रूप में बीता है।

मैं समझता हूँ कि आज के दिन, विशेष रूप से, हर व्यक्ति को अपने विद्यार्थी जीवन की अवश्य ही याद आती है और अपने शिक्षक भी याद आते हैं। मैं आज के इस पावन दिवस पर सम्पूर्ण शिक्षक समाज के प्रति अपना आदर व्यक्त करता हूँ।

आज के दिन, हम सभी पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन को हृदय से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। जिनको भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद और महान दार्शनिक के तौर पर जाना जाता है और हम सभी जानते हैं कि उन्हीं के सम्मान में इस दिन को 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

डॉ. राधाकृष्णन शिक्षकों को भविष्य का शिल्पकार मानते थे। उनका मानना था कि सभी बुराईयों का अन्त शिक्षा के प्रसार से ही हो सकता है और शिक्षा के द्वारा ही मानव मस्तिष्क का सदुपयोग किया जा सकता है।

सम्मानित शिक्षक–गण,

मैं समझता हूँ कि हृदय का विकास अर्थात चरित्र–बल और नैतिकता का विकास सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जैसे किसी मकान की मजबूती उसकी नींव के मजबूत होने पर आधारित होती है, उसी तरह जीवन को सार्थक बनाने के लिए चरित्र–बल की आवश्यकता होती है। मुझे लगता है कि वर्तमान दौर में इस ओर अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

देश व समाज के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। हमारे बच्चों में त्याग, प्रेम, करूणा, सहनशीलता व मानवता जैसे गुणों का विकास हो, बच्चों को शिक्षा के माध्यम से जातिवाद, क्षेत्रवाद, समुदाय, नस्ल व लैंगिक भेदभाव की सीमाओं से मुक्त करते हुए उनमें राष्ट्र सर्वोपरि का भाव जागृत हो, मुझे लगता है कि वर्तमान में इस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है।

नए भारत के निर्माण के लिए हमें गुणवत्तायुक्त शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा। आज के तेजी से बदलते समय में जहाँ नए विचार, मूल्य व धारणाएं तेजी से बदल रही हैं, ऐसे में अच्छी शिक्षा का महत्व बढ़ जाता है। बच्चों को रटने–रटाने की शिक्षण–शैली का समय अब नहीं रहा।

हमें ध्यान देना होगा कि शिक्षा के माध्यम से बच्चे अपनी मौलिक रचनात्मकता का विकास कर सकें। बच्चों में वैज्ञानिक सोच व कौशल विकास को भी प्रोत्साहित करना आज के समय की मांग है। डॉ. राधाकृष्णन ने भी कहा था कि वास्तविक शिक्षक वह है जो बच्चों को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करे।

आज का समय टेक्नोलॉजी, आईटी और सोशल मीडिया का समय है। दुनिया पूरी तरह से डिजिटल हो चुकी है। हर तरह की सूचनाएं और जानकारियां सरलता से उपलब्ध हैं। परन्तु इससे शिक्षकों का महत्व कम नहीं हो जाता है। इंटरनेट हमें सूचनाएं दे सकता है परन्तु ज्ञान नहीं दे सकता।

इंटरनेट व सोशल मीडिया पर बहुत सी सूचनाएं भ्रामक व गलत तथ्यों पर आधारित होती हैं। बच्चों को गलत सूचनाओं से बचाने में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। शिक्षकों को वर्तमान, तकनीक, सूचनाओं व जानकारियों के बारे में निरन्तर अपडेट रहने की भी जरूरत है।

आज की पीढ़ी 'मोबाइल जेनरेशन' है। आज बच्चों को मोबाइल और सोशल मीडिया के एडिक्शन से बचाने की चुनौती भी हमारे समक्ष है। इंटरनेट पर बहुत से ऐसे खेल उपलब्ध है जो बच्चों को मानसिक रूप से हिंसक और

बीमार बना रहे हैं। अत्यधिक मोबाइल व सोशल मीडिया के उपयोग से बच्चे शारीरिक रूप से भी अस्वस्थ हो रहे हैं। ऐसे में शिक्षकों को एक मनोविज्ञानी के रूप में भी कार्य करना है।

बच्चों को मोबाइल, फेसबुक, वाट्सअप की अभासी दुनिया से बाहर लाकर सामाजिक संबंधों व प्रकृति से जोड़ना भी जरूरी है। हमें बच्चों को खेल–कूद व रचनात्मक कार्यों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। उन्हें अपनी संस्कृति, परम्पराओं व संस्कारों की शिक्षा दी जानी भी आवश्यक है। क्योंकि हमें न केवल छात्रों को शिक्षित करना है बल्कि उनके जीवन को बदलना भी है।

सम्मानित शिक्षक–गण,

आप सब ही, वास्तव में बच्चों के भविष्य का निर्माण करते हैं। इसी के जरिए आप सब राष्ट्र के भविष्य का भी निर्माण करते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में शिक्षकों के प्रति समुचित सम्मान के भाव को बढ़ाने के लिए अनेक प्रावधान किए गए हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में एक मजबूत और जीवंत शिक्षा प्रणाली को विकसित करने पर जोर दिया गया है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना गया है। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिक्षकों की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

हमारी शिक्षा नीति भारतीय संस्कारों और गौरव से जुड़ने को प्राथमिकता देती है। भारत की प्राचीन तथा आधुनिक संस्कृति, ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं से प्रेरणा प्राप्त करना भी हमारी शिक्षा नीति का स्पष्ट सुझाव है।

साथियों,

जब शिक्षा विकसित होती है, तो अर्थव्यवस्था और संस्कृति की जड़ें भी मजबूत होती हैं। कभी हमारे अपने नालंदा और विक्रमशिला में दुनिया भर के छात्र और मेधावी लोग पढ़ने के लिए आते थे। इसलिए जब भारत शिक्षा में आगे था, तो उसकी आर्थिक शक्ति भी नई ऊंचाइयों पर पहुंची।

यही कारण है कि 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए भारत अपने शिक्षा क्षेत्र में बदलाव कर रहा है। आज के नए भारत का मिशन है कि अपना देश, दुनिया के लिए शिक्षा और ज्ञान का केंद्र बने। नए भारत का मिशन है कि अपना देश एक बार फिर से वैश्विक स्तर पर सबसे प्रमुख ज्ञान केंद्र के रूप में पहचाना जाए। इसके लिए, नया भारत अपने छात्रों को बहुत कम उम्र से ही नवाचार की भावना से जोड़ रहा है।

साथियों,

आज पूरी दुनिया का ध्यान भारत और उसके युवाओं पर है। दुनिया लोकतंत्र की जननी भारत के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना चाहती है। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में पूरा विश्व जान रहा है कि भारत की धरती ही वैश्विक बंधुत्व एवं विश्व कल्याण की भावना को एक नया आयाम दे सकती है।

हमारे शिक्षक और विद्यार्थी चरक, सुश्रुत तथा आर्यभट्ट से लेकर पोखरण और चंद्रयान–3 तक की उपलब्धियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करें, उनसे प्रेरणा लें तथा बड़ी सोच के साथ राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए कार्य करें। हमारे विद्यार्थी और शिक्षक मिलकर कर्तव्य काल के दौरान भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में तेजी से आगे ले जाएंगे, यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

आज जब पूरा देश आजादी के अमृतकाल के अपने विराट सपनों को साकार करने में जुट चुका है, तब शिक्षा के क्षेत्र में राधाकृष्णन जी के प्रयास हम सभी को प्रेरित करते हैं। शिक्षा नीति तैयार करने में हमारे शिक्षकों ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह हमारे शिक्षकों पर निर्भर है कि वे हमारे युवा पीढ़ी को तैयार करें, जो यह तय करेंगे कि 2047 तक ''अमृत काल'' में भारत का स्वरूप कैसा होगा।

मैं एक बार पुनः सभी सम्मानित होने वाले शिक्षकों को बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि शिक्षा क्षेत्र से जुड़े

अन्य लोग भी इनसे प्रेरणा लेकर और भी अधिक प्रतिबद्धता व लगन से कार्य करेंगे। पुनः शिक्षक दिवस के अवसर पर आप सभी को शुभकामनाएं देते हुए, मैं अपनी वाणी को विराम देता हूँ।

जय हिन्द!